आरएसएस जिसके लिए राष्ट्र प्रथम है और जो देश के ग्रामीण अंचलों में सेवा कार्य संचालित करता है उसके साथ यह छुआछूत जैसा व्यवहार क्यों? अपने इसी सेवा कार्य की बदौलत संघ की ताकत बढ़ती जा रही है जबकि उसके विरोधी जनता की अदालत में खारिज होते जा रहे हैं। संघ कोई आतंकवादी या उग्रवादी संगठन तो है नहीं कि उसके मुख्यालय जाना कोई अपराध है। जब आप कहते हैं कि वार्ता से ही मसले हल किये जा सकते हैं तो संघ से अगर कोई विवाद है भी तो उससे बात करके देखें। वह दृश्य सभी को याद हैं कि हुर्रियत जैसे वो संगठन जो हमेशा पाकिस्तानपरस्ती करते रहते हैं उनसे बात करने को कैसे कुछ राजनीतिक दलों के नेता हुर्रियत प्रमुख के घर गये थे और इन नेताओं को घर के दरवाजे से ही लौटा दिया गया था।

# राष्ट्रवादियों को अनेकता में एकता का पाठ पढ़ा गये प्रणब दा

भारत के पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी की आरएसएस मुख्यालय की यात्रा को लेकर जो विवाद पैदा किया गया उसने हमारे लोकतांत्रिक और राजनीतिक विकास को पीछे धकेलने का काम किया। यही नहीं जिस तरह से कांग्रेस ने इस यात्रा को लेकर विवाद खड़ा किया उससे जाहिर हुआ कि वह संघ फोबिया से ग्रस्त है। यह सही है कि प्रणब मुखर्जी कांग्रेस के शीर्ष नेताओं में से रहे हैं लेकिन जब भारत के राष्ट्रपति पद के चुनाव के लिए वह उम्मीदवार बने तभी से वह किसी एक राजनीतिक दल के नहीं रह गये थे। यही कारण था कि उनकी राष्ट्रपति पद की उम्मीदवारी को अपार समर्थन मिला था। जो व्यक्ति राष्ट्रपति पद पर रह चुका हो उससे अब भी यह अपेक्षा करना कि वह किसी पार्टी लाइन का अनुसरण करेगा बिलकुल अनुचित है।

### मुखर्जी ने आखिर कहा क्या ?

''राष्ट्र, राष्ट्रवाद और देशप्रेम'' के बारे में आरएसएस मुख्यालय में अपने विचार साझा करते हुए मुखर्जी ने कहा कि भारत की आत्मा ''बहुलतावाद एवं सहिष्णुता'' में बसती है। मुखर्जी ने कहा कि भारत में हम अपनी ताकत सहिष्णुता से प्राप्त करते हैं और बहुलवाद का सम्मान करते हैं। हम अपनी विविधता का उत्सव मनाते हैं। उन्होंने प्राचीन भारत से लेकर देश के स्वतंत्रता आंदोलत तक के इतिहास का उल्लेख करते हुए कहा कि हमारा राष्ट्रवाद 'वसुधैव कुटुम्बकम्' तथा 'सर्वे भवन्तु सुखिनः...' जैसे विचारों पर आधारित है। उन्होंने कहा कि हमारे राष्ट्रवाद में विभिन्न विचारों का सम्मिलन हुआ है। प्रणब दा ने कहा कि घृणा और असहिष्णुता से हमारी राष्ट्रीयता कमजोर होती है।

मुखर्जी ने राष्ट्र की अवधारणा को लेकर सुरेन्द्र नाथ बनर्जी तथा बाल गंगाधर तिलक के विचारों का उल्लेख करते हुए कहा कि हमारा राष्ट्रवाद किसी क्षेत्र, भाषा या धर्म विशेष के साथ बंधा हुआ नहीं है। उन्होंने कहा कि हमारे लिए लोकतंत्र सबसे महत्वपूर्ण मार्गदर्शक है। उन्होंने कहा कि हमारे राष्ट्रवाद का प्रवाह संविधान से होता है। ''भारत की आत्मा बहुलतावाद एवं सहिष्णुता में बसती है।'' पूर्व राष्ट्रपति ने कौटिल्य के अर्थशास्त्र का उल्लेख करते हुए कहा कि उन्होंने ही लोगों की प्रसन्नता एवं खुशहाली को राजा की खुशहाली माना था। पूर्व राष्ट्रपति ने कहा कि हमें अपने सार्वजनिक विमर्श को हिंसा से मुक्त करना होगा। साथ ही उन्होंने कहा कि एक राष्ट्र के रूप में हमें शांति, सौहार्द और प्रसन्नता की ओर बढ़ना होगा। मुखर्जी ने कहा कि हमारे राष्ट्र को धर्म, हठधर्मिता या असहिष्णुता के माध्यम से परिभाषित करने का कोई भी प्रयास केवल हमारे अस्तित्व को ही कमजोर करेगा।

### डॉ. हेडगेवार को बताया भारत माता का महान सपूत

अपने लगभग बीस मिनट के भाषण में प्रणब मुखर्जी ने आरएसएस का सीधे एक बार भी नाम नहीं लिया लेकिन संघ मुख्यालय में प्रार्थना के समय खड़े रह कर और संघ संस्थापक डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार के घर जाकर उन्हें श्रद्धांजलि देकर संघ को खुश कर दिया। उल्लेखनीय है कि डॉ. हेडगेवार के घर जाने का निर्णय खुद प्रणब मुखर्जी ने लिया था और उन्होंने वहां विजिटर बुक में लिखा- 'मैं यहाँ भारत माता के महान सपूत को सम्मान और श्रद्धांजलि देने आया हूँ।'

### संघ प्रमुख ने कहा विविधता का सम्मान करते हैं

संघ के इस कार्यक्रम में प्रणब मुखर्जी की उपस्थिति को लेकर ही चर्चाएं ज्यादा रहीं जिससे इस तरफ किसी का ध्यान ही नहीं गया कि कार्यक्रम को संबोधित करते हुए सरसंघचाक मोहन भागवत ने क्या कहा है। भागवत ने भी उसी राष्ट्रवाद की बात की जो प्रणब मुखर्जी सिखाने आये थे। भागवत ने जो कुछ कहा उसमें हिंदू राष्ट्रवाद और भारतीय राष्ट्रवाद में कहीं अंतर नहीं दिखता।

पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी के राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के कार्यक्रम में शामिल होने को लेकर विवाद के बीच संघ प्रमुख मोहन भागवत ने कहा कि यह ''निरर्थक'' बहस है और उनके संगठन के लिए कोई भी बाहरी नहीं है। भागवत ने कहा कि कार्यक्रम के बाद मुखर्जी वही रहेंगे जो वह हैं और संघ भी वही रहेगा जो वह है। उन्होंने कहा कि हम भारतीय नागरिकों के बीच भेदभाव नहीं करते। हमारे लिए कोई भी भारतीय नागरिक बाहरी नहीं है। आरएसएस विविधता में एकता में विश्वास करता है। आरएसएस प्रमुख ने संघ कार्यकर्ताओं को इसको लेकर भी आगाह किया कि विनम्रता के अभाव में सत्ता हानिकारक बन सकती है और नैतिकता के बिना सत्ता अनियंत्रित हो जाती है।

भागवत ने कहा कि अपने कार्यक्रमों में प्रमुख व्यक्तियों को आमंत्रित करना आरएसएस की परंपरा रही है और मुखर्जी के दौरे को लेकर बहस की कोई जरूरत नहीं है। भागवत ने सही कहा कि देश की सेवा करने के लिए अलग अलग दृष्टिकोण या अलग अलग तरीके हो सकते हैं। हालांकि हम सभी भारत माता के बच्चे हैं। उन्होंने इसका भी उल्लेख किया कि आरएसएस संस्थापक ने स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान कांग्रेस के आंदोलनों सहित विभिन्न गतिविधियों में हिस्सा लिया। भागवत ने कहा कि उनका संगठन पूरे समाज को एकजुट करना चाहता है और उसके लिए कोई भी बाहरी नहीं है।

### मुखर्जी के भाषण पर राजनीतिक दलों की प्रतिक्रिया

मुखर्जी के भाषण पर कांग्रेस या भाजपा की प्रतिक्रिया क्या रहने वाली है इसका अंदाजा तो सभी को पहले से था लेकिन वामपंथी दलों के रुख का सभी को इंतजार था। माकपा ने कहा है कि पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी यदि संघ को उसका इतिहास याद दिलाते तो अच्छा होता जबकि भाकपा ने बहुलतावादी और समग्र समाज को असल भारत के रूप में उल्लेखित करने के लिए उनके भाषण की सराहना की है।

कांग्रेस ने संघ और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर जमकर निशाना साधा और कहा कि मुखर्जी ने संघ को 'सच का आईना' दिखाया एवं नरेंद्र मोदी सरकार को 'राजधर्म' की याद दिलाई। पार्टी के मुख्य प्रवक्ता रणदीप सुरजेवाला ने कहा, 'पूर्व राष्ट्रपति का आरएसएस मुख्यालय का दौरा बड़ी चर्चा